दिशा ग्रोवर

सूरज की छुट्टी

बिन मौसम जब बारिश आई

मिल गई सूरज को भी छुट्टी

लेकर इक लम्बी अंगड़ाई

चाहा कर लूँ काम से कुट्टी।

सोच रहे थे सूरज दादा

कैसे अपना मैं दिन बिताऊँ !

है संसार तो देखा भाला,

आज ज़रा घर पर सुसताऊँ।

गर्मी की है छुट्टी सबकी

मुझको भी तो चाह थी इसकी।

जल रहा सालों से यूँ ही,

मार लूँ दरिया में क्या डुबकी ?